بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ وَعَلَى عَبْدِهِ الْمَسِيحِ الْمَوْعُوْد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 31 मार्च 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अमान,1404 हश)

केवल बुराइयों से बचना तक़्वा नहीं बल्कि हक़ीक़ी तक़्वा (वास्तविक तक़्वा) नेकियों पर क़ायम होना और उनको जारी रखना है।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- FOR Eedul Fitr 2026
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

रमज़ान ख़त्म हो चुका का है, आज हम अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ईदुल फ़ित्र मना रहे हैं और इसलिए यह खुशी का दिन मना रहे हैं कि जिन नेकियों को हमने रमज़ान में किया और जिन पर अमल करने का हमने वादा किया, तजदीद की (फिर से ताज़ा किया) उनकी ख़ुशी मनाई जाए। पस (अतः) यह ईद केवल ख़ुशी मनाने का दिन नहीं है, बल्कि यह एहद (संकल्प) करने का भी दिन है कि अब हम उन सभी नेकियों को भी आगे जारी रखेंगे। अगर ऐसा होगा तो हमारी ईद असली ईद होगी।

केवल बुराईयों से बचना ही तकवा नहीं है, बल्कि असली तक़्वा यह है कि नेकियों पर क़ायम रहें और उन्हें लगातार जारी रखा जाए। आज हम इस एहद (वचन) को दोहराते हैं कि हम हमेशा **हुकूक़ुल्लाह (अल्लाह के अधिकार)** और **हुकूक़ुल इबाद (बंदों के अधिकार)** अदा करने पर क़ायम रहेंगे।

ईद केवल खाने-पीने, खेल कूद या नई पोशाक पहनने का नाम नहीं है, बल्कि ईद हमें यह सोचने का संदेश देती है कि आगे भी हमने नेक बातों को जारी रखना है और बुराईयों से बचना है। यदि आज ईद मनाने के बाद हम फिर उसी हालत (स्थिति) में वापस आ गए, जैसे रमज़ान से पहले थी, या अगर हमारे कदम बढ़ने के बजाय रुक गए, तो यह एक मोमिन की शान के खिलाफ़ है। मोमिन की शान तो यही है कि वह नेकी में लगातार आगे बढ़ता है।

आज हमें अपना जायज़ा (आत्ममंथन) लेना चाहिए कि क्या हम अपने इस वादे पर कारबंद रहने के लिए ख़ुद को तय्यार पाते हैं? क्या हम अल्लाह ताला से किये गए वादे को निभाने की कोशिश कर रहे हैं? उसूलन (सिद्धांत रूप में) तो यह होना चाहिए कि ईद-उल-फितर हमें यह नज़ारे (दृश्य) दिखाए कि एक महीने के रोज़े रखने से हमें ख़ुदा मिल गया है। और अगर ख़ुदा मिल जाए तो फिर नेकियों में तरक्क़ी दिखाई देनी चाहिए।

ईद का दिन केवल खुशियाँ मनाने का दिन नहीं है, बल्कि यह इबादत की ओर विशेष ध्यान देने का दिन भी है। इस दिन हम पर बाकी दिनों की निस्बत (तुलना में) एक नमाज़ अधिक फ़र्ज़ होती है। बाक़ी दिनों में तो हम पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ होती हैं, लेकिन ईद के दिन छः नमाज़ें फ़र्ज़ हो जाती हैं। इसलिए यह इबादत के लिए एक विशेष दिन है और हमें इस बात को याद रखना चाहिए।

अगर हमें ख़ुदा नहीं मिला, अगर हम उसकी इबादत का हक़ अदा नहीं कर सके और हुकूकुल इबाद (बन्दों के अधिकार) अदा नहीं कर सके, तो सिर्फ ख़ुशी मनाना तो ईद का मकसद नहीं, बंदों के अधिकार अदा करना भी ज़रूरी हैं यह भी इबादत का एक रूप है। ऐसा शख्स (व्यक्ति) जिसे ख़ुदा नहीं मिला उसकी मिसाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने उस पागल शख्स से दी है जिसे हीरे-जवाहरात की पहचान ही नहीं है और वह काँच के टुकड़ों को हीरे समझ लेता है। जब इंसान का ख़ुदा से विशेष संबंध बनता है, तभी वह उसे पहचानता है। जिसे अल्लाह तआला पसंद करता है, उसे अपनी पहचान और मारिफ़त प्रदान करता है। एक हक़ीक़ी (असली) मोमिन की ख़ुशी तो यही है कि वह ख़ुदा को पा ले।

आँहज़रत सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस तरह एक मां को अपने खोए हुए बच्चे से मिलकर बेहद खुशी होती है, उससे भी ज्यादा खुशी ख़ुदा को अपने बंदे के वापस आने से मिलती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़र्माते हैं कि ईद का दिन बेशक मुबारक दिन है, लेकिन एक उससे भी ज़्यादा मुबारक दिन है। जब इंसान दिल से तौबा करता है तो वह दिन जुमे और ईद के दिन से भी ज्यादा खुशी का दिन है।

उन्होंने फरमाया कि सच्ची तौबा के साथ हक़ीक़ी पाकीज़गी (वास्तविक पवित्रता) और तहारत (शुद्धता) की जरूरत है। हर प्रकार की बुराई और गंदगी से अलग होना शर्त है, वरना (अन्यथा) केवल तौबा का शब्द दोहराने से कोई लाभ नहीं। जो दिन ऐसा मुबारक दिन हो जिसमें इंसान अपने बुरे कर्मों से तौबा करके अल्लाह के साथ सच्चा वादा कर ले और उसके अहकाम के सामने अपना सिर झुका दे, तो क्या शक है (निश्चित रूप से) वह उस अज़ाब से बच जाएगा जो उसके बुरे कर्मों के कारण हो रहा था, और इस तरह इंसान उस चीज़ को पालेगा जिसकी उम्मीद भी नहीं थी।

आजकल दुनिया में बहुत सी गिलाज़तें (बुरे काम) हैं, लेकिन जब एक मोमिन इन दिनों में अल्लाह के लिए रोज़े रखता है और उसकी क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने की कोशिश करता है, तो अल्लाह तआला उसे बहुत बड़ा अजर (प्रतिफल) देता है। जब हम इन बातों पर अमल करने की कोशिश करेंगे, तो हम और हमारे परिवार ईद की उन असली खुशियों को पाने वाले होंगे।

अल्लाह करे कि हम रमज़ान की उन नेकियों को जारी रखने वाले बनें। अगर रमज़ान में हम तरावीह या तहज्जुद के लिए मस्जिद जाते थे, तो अब घर में भी नफ़ल नमाज़ों का कुछ न कुछ प्रबंध करें। आख़िरकार कि हम एक-दूसरे का अधिकार अदा करने वाले हों। अल्लाह ताला हमारे अंदर यह पाक तबदीली (पवित्र परिवर्तन) पैदा करता चला जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि तमाम अहमदियों के लिए दुआएं करते रहो कि अल्लाह उन्हें अपनी रहमत की चादर में ढांक ले। बहुत सारी जगहों पर अहमदी लोग बिला वजह नाम निहाद (तथा-कथित) क़ानून की पकड़ में हैं, जैसे पाकिस्तान में, जहां वे मज़हबी आज़ादी (धार्मिक स्वतंत्रता) के साथ ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ सकते हैं। अल्लाह तआला उन्हें यह अवसर दे कि वे असली ईद मनाने वाले हों, अपने आपको ख़ुदा के क़रीब लाने वाले हों, और ईद की ज़ाहरी ख़ुशियाँ भी मना सकें। अल्लाह करे कि उनकी कठिनइयाँ जल्दी दूर हों।

आज भी उन्होंने डर की स्थिति में अलग-अलग समय और जगह बदल-बदल कर ईद की नमाज अदा की। कराची में और कुछ जगहों पर नमाज़ पढ़ने से रोके भी गए और विरोधियों के मस्जिदों पर हमले भी हुए। कानून लागू करने वालों ने मस्जिदों को ही ताले लगा दिए बजाय इसके कि हमला करने वालों को रोकते। अल्लाह तआला जल्द ही इन मुखालीफों की पकड़ के सामान करे। आमीन.

बीमारों के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला सेहत दे। इंसानियत, इस्लाम और जमात के लिए माली (आर्थिक) और हर तरह की कुर्बानियों को करने वालों के लिए भी अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल नाज़िल फ़रमाए। आमीन.

शहीदों के बच्चों, राह-ए-मोला के क़ैदियाँ, वक्फ-ए-जिंदगी करने वाले और सारी उम्मत-ए-मुसलिमः के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला मुसलमानों को समझ और बुद्धि दे कि वे हक़ीक़ी मानों में खुदा का दामन पकड़ सकें और इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलै. को कुबूल करके ख़ुदा की रज़ा को पा सकें और हक़ीक़ी ईद मना सकें।

खुतबा-ए-सानिया के अंत में हुजूर-ए-अनवर ने तमाम अहबाब जमाअत-ए-अहमदिया आलम गीर को ईद मुबारक का तोहफ़ा दिया। इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने फरमाया कि मैंने कहा था कि पाकिस्तान के लोगों को मुस्तक़िल (निरंतर) दुआओं में याद रखें। उनके हालात बड़े कठिन हैं। अल्लाह ताला हक़ीक़ी अर्थों में उनके लिए ईद मुबारक करे। उन सबको ईद मुबारक हो, बेचारे घरों में बैठे हैं, बाहरी तौर पर मायूस हैं, लेकिन उन्हें चिंता नहीं करनी चाहिए। अल्लाह तआला इंशाअल्लाह जल्द ही हालात बदल देगा। (आमीन)

ات اعمالنا

مَن یَّھۡدِہِ اللہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَن یُّضۡلِلۡہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشۡھَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَاَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَرَسُوۡلُہٗ۔ عِبَادَ اللہِ رَحِمَکُمُ اللہُ اِنَّ اللہَ یَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَیَنۡھٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ وَالۡبَغۡیِ یَعِظُکُمۡ لَعَلَّکُمۡ تَذَکَّرُوۡنَ فَاذۡکُرُوا اللہَ یَذۡکُرۡکُمۡ وَادۡعُوۡہُ یَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ وَلَذِکۡرُ اللہِ اَکۡبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131